THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.39

भारत-विभाजन की हिंदी कहानियों में मानवीय त्रासदी और सांस्कृतिक पहचान

धर्मेन्द्र कुमार सेहरा
शोधार्थी, जयोति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश:

भारत-विभाजन (1947) भारतीय इतिहास की सबसे भीषण मानवीय त्रासदियों में से एक था, जिसने लाखों लोगों के जीवन, स्मृतियों और सांस्कृतिक अस्तित्व को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। हिंदी कहानियों में विभाजन केवल राजनीतिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि विस्थापन, हिंसा, भय, असुरक्षा, पारिवारिक विघटन तथा मानवीय संबंधों के टूटने की करुण गाथा के रूप में चित्रित हुआ है। प्रस्तुत शोध-लेख का उद्देश्य हिंदी विभाजन-कथाओं में निहित मानवीय त्रासदी और सांस्कृतिक पहचान के प्रश्नों का विश्लेषण करना है। भीष्म साहनी, यशपाल, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती तथा अन्य कथाकारों की रचनाओं के माध्यम से यह अध्ययन दर्शाता है कि विभाजन ने व्यक्तियों और समुदायों की सांस्कृतिक स्मृतियों, भाषायी पहचान, धार्मिक सह-अस्तित्व और सामाजिक मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित किया। साथ ही, ये कहानियाँ मानवीय संवेदना, सहिष्णुता और साझा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की आवश्यकता को भी रेखांकित करती हैं। इस प्रकार हिंदी विभाजन-कथाएँ इतिहास, स्मृति और पहचान के जटिल अंतर्संबंधों को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बनती हैं।

कुंजी शब्द— भारत-विभाजन, हिंदी कहानी, मानवीय त्रासदी, सांस्कृतिक पहचान, विस्थापन, सांप्रदायिकता, स्मृति, विभाजन साहित्य, मानवीय संवेदना, साझा संस्कृति।

1. प्रस्तावना एवं भारत-विभाजन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1.1 प्रस्तावना

भारत-विभाजन बीसवीं शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण और त्रासद ऐतिहासिक घटनाओं में से एक है, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। वर्ष 1947 में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत का विभाजन भारत और पाकिस्तान नामक दो स्वतंत्र राष्ट्रों में हुआ। यह विभाजन केवल भौगोलिक सीमाओं का पुनर्निर्धारण नहीं था, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन, स्मृतियों, संबंधों और सांस्कृतिक पहचान के विखंडन का भी प्रतीक था। विभाजन के परिणामस्वरूप व्यापक स्तर पर सांप्रदायिक हिंसा, जनसंहार, पलायन, विस्थापन और मानवीय संकट उत्पन्न हुआ, जिसकी पीड़ा आज भी सामाजिक स्मृति का अभिन्न हिस्सा बनी हुई है। इस ऐतिहासिक घटना ने साहित्यकारों को गहराई से प्रभावित किया और उन्होंने विभाजन के अनुभवों को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

विभाजन साहित्य उस साहित्यिक धारा को संदर्भित करता है जिसमें भारत-विभाजन से उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और मानवीय अनुभवों का चित्रण किया गया है। इस साहित्य का केंद्र केवल ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि उन मानवीय त्रासदियों को स्वर देना है जो विभाजन के कारण उत्पन्न हुईं। विभाजन साहित्य में विस्थापन, सांप्रदायिकता, पहचान-संकट, स्मृति, हिंसा, स्त्री-अनुभव तथा

मानवीय संबंधों के विघटन जैसे विषय प्रमुख रूप से उभरकर सामने आते हैं (पाण्डेय, 2001)। हिंदी कहानी ने इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी कथाकारों ने विभाजन को केवल राजनीतिक घटना के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे सामान्य मनुष्य की पीड़ा, संघर्ष और अस्तित्व के संकट के रूप में प्रस्तुत किया। इसलिए हिंदी विभाजन-कथाएँ इतिहास और साहित्य के बीच एक सेतु का कार्य करती हैं, जो विभाजन की आधिकारिक ऐतिहासिक व्याख्याओं से परे जाकर मानवीय अनुभवों की गहन पड़ताल करती हैं (सिंह, 2010)।

1.2 भारत-विभाजन : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत-विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि औपनिवेशिक शासन की उन नीतियों से जुड़ी हुई है जिन्होंने भारतीय समाज में धार्मिक और सामुदायिक आधार पर विभाजन की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित किया। ब्रिटिश शासन की 'फूट डालो और राज करो' नीति ने हिंदू और मुस्लिम समुदायों के मध्य अविश्वास की भावना को बढ़ावा दिया। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा पृथक निर्वाचन की व्यवस्था ने भी सामुदायिक पहचान को राजनीतिक स्वरूप प्रदान किया। मुस्लिम लीग द्वारा पृथक राष्ट्र की माँग तथा कांग्रेस और लीग के बीच बढ़ते मतभेदों ने अंततः विभाजन की प्रक्रिया को गति प्रदान की (चन्द्र, 2016)। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात ब्रिटिश सरकार द्वारा सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, जिसके परिणामस्वरूप माउंटबेटन योजना के आधार पर भारत का विभाजन स्वीकार किया गया।

विभाजन का प्रभाव जन-जीवन पर अत्यंत व्यापक और विनाशकारी रहा। अनुमानतः एक करोड़ से अधिक लोगों को अपने घर-बार छोड़कर नए देशों की ओर पलायन करना पड़ा तथा लाखों लोग सांप्रदायिक हिंसा का शिकार बने (बुटालिया, 1998)। पंजाब, बंगाल, सिंध और उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत जैसे क्षेत्रों में हिंसा और असुरक्षा का वातावरण व्याप्त हो गया। अनेक परिवार बिखर गए, सामाजिक संबंध टूट गए और मनुष्य अपनी ही जन्मभूमि में पराया बन गया। विभाजन के दौरान हुए सामूहिक पलायन ने मानव इतिहास के सबसे बड़े शरणार्थी संकटों में से एक को जन्म दिया। इस विस्थापन ने केवल भौतिक संपत्ति का ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृतियों, स्थानीय परंपराओं और सामाजिक पहचान का भी गहरा नुकसान पहुँचाया (पाण्डेय, 2001)। विभाजन के अनुभवों ने लोगों के मानस पर स्थायी घाव छोड़े, जिनकी अभिव्यक्ति बाद के साहित्य में व्यापक रूप से दिखाई देती है।

विभाजन की त्रासदी का सबसे भयावह पक्ष सांप्रदायिक हिंसा थी। धर्म के आधार पर निर्मित राजनीतिक सीमाओं ने पड़ोसियों, मित्रों और सहकर्मियों को एक-दूसरे का शत्रु बना दिया। हिंसा, लूटपाट, हत्या, अपहरण और स्त्रियों के विरुद्ध अत्याचार जैसी घटनाओं ने सामाजिक संरचना को झकझोर दिया। विशेष रूप से महिलाओं ने दोहरे उत्पीड़न का सामना किया, क्योंकि वे सांप्रदायिक संघर्षों में हिंसा का प्रमुख लक्ष्य बनीं । इन घटनाओं ने साहित्यकारों को मानवीय संवेदना, नैतिकता और सांस्कृतिक पहचान के प्रश्नों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया।

1.3 हिंदी विभाजन-कथा साहित्य का विकास

भारत-विभाजन के बाद हिंदी साहित्य में विभाजन-कथाओं की एक सशक्त परंपरा विकसित हुई। इन कहानियों ने विभाजन को केवल राजनीतिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय अनुभव और सामाजिक यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया। विभाजन-कथा साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों में विस्थापन, स्मृति, सांप्रदायिकता, सांस्कृतिक पहचान, मानवीय संबंधों का विघटन तथा पुनर्स्थापन की आकांक्षा प्रमुख हैं। इन रचनाओं में विभाजन से प्रभावित सामान्य मनुष्य की पीड़ा और संघर्ष को केंद्र में रखा गया है। कथाकारों ने उन मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक आघातों को चित्रित किया है जो राजनीतिक निर्णयों के परिणामस्वरूप समाज पर पड़े (पाण्डेय, 2010)।

हिंदी विभाजन-कथा साहित्य के विकास में भीष्म साहनी, यशपाल, कृष्णा सोबती, मोहन राकेश, विष्णु प्रभाकर, कमलेश्वर तथा राही मासूम रज़ा जैसे रचनाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भीष्म साहनी की कहानी *अमृतसर आ गया है* विभाजन की भयावहता और मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है, जबकि *पाली* सांप्रदायिक पहचान और मानवीय संबंधों के जटिल प्रश्नों को सामने लाती है। कृष्णा सोबती की *सिक्का बदल गया* विभाजन के बाद बदलती सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों को रेखांकित करती है। मोहन राकेश की *मलबे का मालिक* विस्थापन और स्वामित्व-

बोध के संकट को अभिव्यक्त करती है, जबकि विष्णु प्रभाकर की *मेरा वतन* जन्मभूमि के प्रति भावनात्मक लगाव और सांस्कृतिक स्मृति का सशक्त दस्तावेज़ है। इन रचनाओं में विभाजन केवल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि मनुष्य की अस्मिता, स्मृति और अस्तित्व से जुड़ा केंद्रीय प्रश्न बनकर उभरता है।

इस प्रकार हिंदी विभाजन-कथा साहित्य भारतीय समाज की सामूहिक स्मृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह साहित्य विभाजन की घटनाओं को केवल इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें मानवीय अनुभवों और सांस्कृतिक पहचान के व्यापक संदर्भ में समझने का अवसर प्रदान करता है। हिंदी कहानियाँ विभाजन से उत्पन्न त्रासदियों, संघर्षों और मानवीय मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए समकालीन समाज को सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और मानवता का संदेश देती हैं।

2. हिंदी कहानियों में मानवीय त्रासदी का चित्रण

भारत-विभाजन की हिंदी कहानियाँ मानवीय त्रासदी के विविध आयामों को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थपरकता के साथ अभिव्यक्त करती हैं। विभाजन केवल राजनीतिक सीमाओं के पुनर्गठन की घटना नहीं था, बल्कि यह करोड़ों लोगों के जीवन में गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन लेकर आया। हिंदी कथाकारों ने विभाजन की भयावहता को सामान्य मनुष्य के अनुभवों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जहाँ विस्थापन, सांप्रदायिक हिंसा, स्त्री-अस्मिता पर आघात, पारिवारिक विघटन और मानसिक आघात जैसी समस्याएँ प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती हैं। इन कहानियों में इतिहास की बड़ी घटनाएँ व्यक्तिगत जीवन की छोटी-छोटी त्रासदियों में रूपांतरित होकर पाठकों के सामने आती हैं, जिससे विभाजन की वास्तविक मानवीय कीमत का आकलन संभव हो पाता है (पाण्डेय, 2001)।

विभाजन की सबसे बड़ी त्रासदियों में से एक व्यापक स्तर पर हुआ विस्थापन था। लाखों लोगों को अपनी जन्मभूमि, घर, खेत, व्यवसाय और सामाजिक परिवेश को छोड़कर अनिश्चित भविष्य की ओर पलायन करना पड़ा। हिंदी विभाजन-कथाओं में घर केवल भौतिक संरचना नहीं, बल्कि स्मृतियों, भावनाओं, संबंधों और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बनकर उभरता है। जब व्यक्ति अपने घर से विस्थापित होता है, तब वह केवल स्थान नहीं खोता, बल्कि अपने अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी खो देता है। भीष्म साहनी, मोहन राकेश और विष्णु प्रभाकर जैसे कथाकारों की रचनाओं में यह पीड़ा अत्यंत मार्मिक रूप में अभिव्यक्त हुई है। *मलबे का मालिक* जैसी कहानियों में यह प्रश्न उभरता है कि जब व्यक्ति अपनी भूमि और घर से वंचित हो जाता है, तब उसकी पहचान का आधार क्या रह जाता है। विभाजन के कारण उत्पन्न शरणार्थी जीवन की कठिनाइयाँ भी इन कहानियों का महत्वपूर्ण विषय हैं। शरणार्थी शिविरों की असुविधाएँ, आर्थिक संकट, सामाजिक असुरक्षा और भविष्य के प्रति अनिश्चितता ने विस्थापित लोगों के जीवन को अत्यंत कठिन बना दिया था (सिंह, 2009)। हिंदी कहानियाँ इन परिस्थितियों का चित्रण करते हुए यह स्पष्ट करती हैं कि विस्थापन केवल भौगोलिक परिवर्तन नहीं, बल्कि गहन मानसिक और सांस्कृतिक विघटन की प्रक्रिया भी है।

विभाजन साहित्य में सांप्रदायिक हिंसा का चित्रण मानवीय त्रासदी के सबसे भयावह पक्ष को उजागर करता है। विभाजन के दौरान हुई हत्या, लूटपाट, आगजनी और सामूहिक हिंसा ने मानव सभ्यता के नैतिक मूल्यों को चुनौती दी। हिंदी कथाकारों ने इन घटनाओं को केवल तथ्यात्मक रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उनके माध्यम से मनुष्य के भीतर विद्यमान पशुता और मानवता के द्वंद्व को भी अभिव्यक्त किया है। भीष्म साहनी की *अमृतसर आ गया है* तथा अन्य विभाजन-कथाओं में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार सामान्य परिस्थितियों में शांत और सह-अस्तित्व में रहने वाले लोग सांप्रदायिक उन्माद के प्रभाव में हिंसक हो जाते हैं। धर्म और समुदाय के नाम पर होने वाली हिंसा मनुष्य की नैतिक चेतना को कुंठित कर देती है और वह अपने पड़ोसियों तथा मित्रों को भी शत्रु के रूप में देखने लगता है (बुटालिया, 1998)। इसके विपरीत अनेक कहानियों में ऐसे पात्र भी दिखाई देते हैं जो हिंसा और नफरत के वातावरण में भी मानवता, करुणा और सहानुभूति के मूल्यों को बनाए रखते हैं। इस प्रकार हिंदी विभाजन-कथाएँ यह संकेत करती हैं कि मनुष्य के भीतर विनाशकारी प्रवृत्तियों के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं की शक्ति भी विद्यमान रहती है।

विभाजन की त्रासदी का सबसे संवेदनशील और जटिल पक्ष स्त्रियों के अनुभवों से जुड़ा हुआ है। विभाजन के दौरान महिलाओं को अपहरण, बलात्कार, जबरन धर्म-परिवर्तन और सामाजिक अपमान जैसी अमानवीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। स्त्री-शरीर सांप्रदायिक प्रतिशोध और शक्ति-प्रदर्शन का माध्यम बन गया, जिसके परिणामस्वरूप हजारों महिलाओं का जीवन स्थायी रूप से प्रभावित हुआ। हिंदी कहानियों में महिला पात्र केवल पीड़िता के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील और संवेदनशील व्यक्तित्वों के रूप में भी चित्रित की गई हैं। कृष्णा सोबती तथा अन्य कथाकारों की रचनाओं में स्त्रियों के मनोवैज्ञानिक संघर्ष, आत्मसम्मान की रक्षा तथा सामाजिक पुनर्स्थापन के प्रयासों को विशेष महत्व दिया गया है। विभाजन के बाद अनेक महिलाओं को अपने परिवारों और समुदायों द्वारा भी स्वीकार नहीं किया गया, जिससे उनका मानसिक आघात और गहरा हो गया। इन कहानियों में स्त्री-अस्मिता का प्रश्न केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श का विषय बनकर सामने आता है। महिला पात्रों के माध्यम से कथाकार यह दर्शाते हैं कि विभाजन की हिंसा का प्रभाव केवल शारीरिक स्तर तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने स्त्रियों के आत्मविश्वास, पहचान और मानसिक संतुलन को भी गहराई से प्रभावित किया।

विभाजन के कारण उत्पन्न पारिवारिक विघटन और मानसिक आघात हिंदी कहानियों का एक अन्य महत्वपूर्ण विषय है। सांप्रदायिक दंगों और व्यापक पलायन के दौरान असंख्य परिवार बिखर गए, अनेक लोग अपने प्रियजनों से बिछड़ गए और कई परिवार स्थायी रूप से टूट गए। इन परिस्थितियों ने सामाजिक संबंधों की संरचना को गंभीर रूप से प्रभावित किया। हिंदी विभाजन-कथाओं में बिछड़ते हुए परिवारों, खोए हुए परिजनों और टूटते संबंधों की पीड़ा बार-बार उभरकर सामने आती है। परिवार, जो भारतीय समाज में सुरक्षा और आत्मीयता का प्रमुख आधार माना जाता है, विभाजन के दौरान असुरक्षा और विखंडन का शिकार हो गया। इस विघटन ने व्यक्तियों के भीतर गहरे मानसिक आघात उत्पन्न किए, जिनका प्रभाव लंबे समय तक बना रहा (सिंह, 2010)।

विभाजन की स्मृतियाँ भी इन कहानियों में एक स्थायी मनोवैज्ञानिक उपस्थिति के रूप में दिखाई देती हैं। अनेक पात्र अपने अतीत की यादों, खोए हुए घरों, बिछड़े हुए संबंधों और हिंसक घटनाओं के अनुभवों से मुक्त नहीं हो पाते। स्मृति उनके वर्तमान जीवन को निरंतर प्रभावित करती रहती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो विभाजन एक सामूहिक आघात था, जिसने पूरे समाज की मानसिक संरचना को प्रभावित किया (पाण्डेय, 2001)। हिंदी कहानियों में यह आघात स्मृतियों, स्वप्नों, अपराधबोध, भय और असुरक्षा की भावनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। अनेक पात्र नए परिवेश में जीवन प्रारंभ करने का प्रयास करते हैं, किंतु उनका अतीत उन्हें लगातार अपनी ओर खींचता रहता है। इस प्रकार विभाजन केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं रह जाता, बल्कि वह स्मृति और अनुभव के रूप में पीढ़ियों तक जीवित रहता है।

2. हिंदी कहानियों में सांस्कृतिक पहचान का प्रश्न

भारत-विभाजन की हिंदी कहानियाँ केवल मानवीय त्रासदी का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान के जटिल प्रश्नों को भी गहनता से अभिव्यक्त करती हैं। विभाजन ने लाखों लोगों को उनकी जन्मभूमि, सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक जड़ों से अलग कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप पहचान का गंभीर संकट उत्पन्न हुआ। सांस्कृतिक पहचान केवल किसी व्यक्ति की धार्मिक अथवा भाषायी पहचान तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसमें उसकी स्मृतियाँ, परंपराएँ, जीवन-शैली, सामाजिक संबंध और ऐतिहासिक अनुभव भी शामिल होते हैं। विभाजन के बाद जब लोग अपने परिचित परिवेश से विस्थापित हुए, तब उनके सामने केवल नए स्थान में बसने की चुनौती नहीं थी, बल्कि अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को सुरक्षित रखने और पुनर्परिभाषित करने की चुनौती भी थी। हिंदी विभाजन-कथाएँ इस सांस्कृतिक संकट तथा उसके विविध आयामों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं (पाण्डेय, 2001)।

सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में स्मृति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और विभाजन साहित्य में स्मृति एक केंद्रीय विषय के रूप में उपस्थित है। विभाजन के कारण विस्थापित हुए लोगों के लिए खोया हुआ घर, गाँव, शहर और जन्मभूमि केवल भौगोलिक स्थान नहीं रह जाते, बल्कि वे सांस्कृतिक स्मृति

के जीवंत प्रतीक बन जाते हैं। हिंदी कहानियों में अनेक पात्र अपने अतीत को याद करते हुए उस संसार को पुनर्जीवित करने का प्रयास करते हैं, जहाँ उनके बचपन, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक अनुभवों की जड़ें निहित थीं। विष्णु प्रभाकर की *मेरा वतन* तथा अन्य विभाजन-कथाओं में जन्मभूमि के प्रति गहरा भावनात्मक लगाव दिखाई देता है। पात्रों के लिए उनकी पुरानी भूमि केवल रहने का स्थान नहीं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान का आधार होती है। विभाजन के बाद जब वे उस स्थान से वंचित हो जाते हैं, तब उनके भीतर एक स्थायी रिक्तता और विस्थापन-बोध उत्पन्न होता है (बुटालिया, 1998)। स्मृति इस रिक्तता को भरने का माध्यम बनती है और व्यक्ति अपनी पहचान को अतीत के अनुभवों से जोड़कर बनाए रखने का प्रयास करता है। इस प्रकार स्मृति और पहचान का संबंध हिंदी विभाजन-कथाओं में अत्यंत गहरा और बहुआयामी रूप में व्यक्त हुआ है।

विभाजन की प्रक्रिया ने धार्मिक पहचान को राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर अत्यधिक महत्व प्रदान किया। धर्म के आधार पर दो राष्ट्रों के निर्माण ने यह धारणा स्थापित की कि धार्मिक पहचान ही व्यक्ति की प्राथमिक पहचान है। किंतु हिंदी कहानियाँ इस धारणा की आलोचनात्मक समीक्षा करती हैं और धर्म आधारित विभाजन की विडंबनाओं को उजागर करती हैं। विभाजन के दौरान जिन लोगों ने वर्षों तक साथ रहकर साझा जीवन व्यतीत किया था, वे अचानक धार्मिक आधार पर एक-दूसरे के विरोधी घोषित कर दिए गए। अनेक कथाओं में यह प्रश्न उभरता है कि क्या मनुष्य की पहचान केवल उसके धर्म से निर्धारित की जा सकती है। भीष्म साहनी, यशपाल और कृष्णा सोबती जैसे कथाकारों ने ऐसे पात्रों का चित्रण किया है जो सांप्रदायिक उन्माद के बीच भी मानवीय मूल्यों को धर्म से अधिक महत्त्व देते हैं। उनकी रचनाएँ यह संकेत करती हैं कि मनुष्य की वास्तविक पहचान उसकी मानवता, संवेदनशीलता और नैतिक चेतना में निहित है, न कि केवल उसकी धार्मिक संबद्धता में।

धर्म आधारित विभाजन की विडंबना इस तथ्य में भी निहित है कि जिस विभाजन को धार्मिक सुरक्षा और पहचान की रक्षा के नाम पर उचित ठहराया गया था, उसी ने लाखों लोगों को असुरक्षा, भय और विस्थापन का शिकार बना दिया। हिंदी कहानियों में अनेक पात्र अपने धार्मिक समुदाय से जुड़ाव बनाए रखते हुए भी यह अनुभव करते हैं कि उनकी मानवीय पहचान उससे कहीं अधिक व्यापक है। सांप्रदायिक हिंसा के बीच भी कुछ पात्र दूसरे धर्म के लोगों की रक्षा करते हैं, उन्हें शरण देते हैं और मानवता का परिचय देते हैं। इस प्रकार हिंदी विभाजन-कथाएँ धर्म और मानवता के बीच उत्पन्न तनाव को रेखांकित करते हुए अंततः मानवीय सह-अस्तित्व और करुणा के पक्ष में खड़ी दिखाई देती हैं।

सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण आयाम भाषा, लोक-संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा हुआ है। विभाजन के परिणामस्वरूप अनेक क्षेत्रों की मिश्रित और साझा सांस्कृतिक परंपराएँ खंडित हो गईं। पंजाब, सिंध और बंगाल जैसे क्षेत्रों में सदियों से विकसित बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक जीवन-शैली विभाजन की प्रक्रिया से गहराई से प्रभावित हुई। हिंदी कहानियों में इस विघटन की पीड़ा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। लोकगीत, बोलियाँ, त्योहार, रीति-रिवाज और सामाजिक संबंध, जो किसी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान के महत्वपूर्ण आधार होते हैं, विभाजन के बाद संकटग्रस्त हो गए। विस्थापित लोगों के लिए भाषा और सांस्कृतिक परंपराएँ अपने अतीत से जुड़ने का माध्यम बन गईं। वे अपने नए परिवेश में भी उन सांस्कृतिक प्रतीकों को संरक्षित रखने का प्रयास करते हैं जो उनकी पहचान का अभिन्न हिस्सा थे।

हिंदी विभाजन-कथाएँ यह भी दर्शाती हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप की संस्कृति मूलतः साझा सांस्कृतिक परंपराओं पर आधारित रही है। विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सह-अस्तित्व, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक सहभागिता की लंबी परंपरा रही है। विभाजन ने भले ही राजनीतिक सीमाएँ निर्धारित कर दी हों, किंतु सांस्कृतिक स्तर पर इन संबंधों को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सका। अनेक कहानियों में साझा भाषा, भोजन, संगीत, लोकाचार और जीवन-मूल्यों की स्मृतियाँ इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि सांस्कृतिक पहचान किसी एक धार्मिक समुदाय तक सीमित नहीं होती। यही कारण है कि विभाजन के बाद भी अनेक पात्र अपने अतीत की साझा संस्कृति को याद करते हैं और उसके संरक्षण की आकांक्षा व्यक्त करते हैं (पाण्डेय, 2001)।

विभाजन के पश्चात सांस्कृतिक अस्मिता के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया भी हिंदी कहानियों का महत्वपूर्ण विषय है। विस्थापित लोगों को नए सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में स्वयं को पुनर्स्थापित करना पड़ा। यह प्रक्रिया केवल आर्थिक या भौतिक पुनर्वास तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें नई परिस्थितियों के अनुरूप अपनी पहचान को पुनर्गठित करने की चुनौती भी शामिल थी। शरणार्थी समुदायों ने नए नगरों और बस्तियों में अपने सांस्कृतिक जीवन को पुनर्संगठित करने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी भाषा, परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक संस्थाओं को नए परिवेश में जीवित रखने का प्रयास किया, जिससे उनकी सांस्कृतिक निरंतरता बनी रह सके। हिंदी कहानियाँ इस संघर्ष को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित करती हैं और यह दर्शाती हैं कि सांस्कृतिक पहचान स्थिर नहीं होती, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार निरंतर विकसित और पुनर्निर्मित होती रहती है।

नए परिवेश में पहचान की तलाश करते हुए विभाजन-पीड़ित पात्र अक्सर अतीत और वर्तमान के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हैं। वे अपनी पुरानी स्मृतियों को संजोए रखते हुए नए सामाजिक परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं। यह प्रक्रिया कभी सहज नहीं होती, क्योंकि विस्थापन की स्मृतियाँ निरंतर उनके मानस को प्रभावित करती रहती हैं। फिर भी वे नए जीवन की संभावनाओं को स्वीकार करते हुए अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को पुनर्परिभाषित करते हैं। इस प्रकार हिंदी विभाजन-कथाएँ सांस्कृतिक पहचान को केवल हानि और विघटन की प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि पुनर्निर्माण, अनुकूलन और सांस्कृतिक निरंतरता की प्रक्रिया के रूप में भी प्रस्तुत करती हैं।

3. प्रमुख हिंदी विभाजन-कथाकारों की कहानियों का विश्लेषण

भारत-विभाजन की त्रासदी को हिंदी कहानी साहित्य में अनेक रचनाकारों ने अपने-अपने अनुभवों, वैचारिक दृष्टिकोणों और रचनात्मक संवेदनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। विभाजन-कथाओं का महत्व केवल इस कारण नहीं है कि वे एक ऐतिहासिक घटना का साहित्यिक दस्तावेज़ प्रस्तुत करती हैं, बल्कि इसलिए भी कि वे मानवीय पीड़ा, सांस्कृतिक विघटन, पहचान-संकट और मानवता की खोज जैसे जटिल प्रश्नों का गहन विश्लेषण करती हैं। भीष्म साहनी, यशपाल, कृष्णा सोबती, कमलेश्वर तथा अन्य कथाकारों की रचनाएँ विभाजन के विविध आयामों को उद्घाटित करती हैं। इन लेखकों की कहानियों में विभाजन केवल राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि मनुष्य और समाज के नैतिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक संकट का प्रतीक बनकर उपस्थित होता है (पाण्डेय, 2010)।

भीष्म साहनी हिंदी विभाजन साहित्य के सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचनाकारों में गिने जाते हैं। उनकी कहानियों में विभाजन की भयावहता के साथ-साथ मानवीय संवेदना का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। *अमृतसर आ गया है* विभाजन-कालीन हिंसा और भय के वातावरण को प्रस्तुत करने वाली एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी में रेलगाड़ी केवल परिवहन का साधन नहीं, बल्कि विभाजन की त्रासदी का प्रतीक बन जाती है। यात्रा के दौरान व्याप्त भय, अविश्वास और असुरक्षा उस समय की सामाजिक परिस्थितियों को सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं। कहानी यह दिखाती है कि सांप्रदायिक उन्माद किस प्रकार सामान्य मनुष्यों के जीवन को प्रभावित करता है और उन्हें भय तथा असुरक्षा की स्थिति में धकेल देता है। साथ ही, भीष्म साहनी उन मानवीय मूल्यों को भी रेखांकित करते हैं जो हिंसा और नफरत के वातावरण में भी जीवित रहते हैं। उनकी कहानियों में पीड़ित व्यक्ति किसी विशेष धर्म या समुदाय का प्रतिनिधि नहीं, बल्कि समूची मानवता का प्रतीक बनकर उभरता है (सहनी, 2018)। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ विभाजन की राजनीतिक व्याख्या से आगे बढ़कर मानवीय संवेदना की व्यापक भूमि पर स्थापित होती हैं।

भीष्म साहनी की अन्य विभाजन-कथा *पाली* भी सांस्कृतिक पहचान और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को उजागर करती है। कहानी में एक बालक की पहचान को लेकर उत्पन्न परिस्थितियाँ यह प्रश्न उठाती हैं कि मनुष्य की वास्तविक पहचान धर्म से निर्धारित होती है या उसके मानवीय संबंधों से। इस प्रकार भीष्म साहनी की कहानियाँ विभाजन की पीड़ा को केवल बाह्य घटनाओं के माध्यम से नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर उत्पन्न नैतिक और भावनात्मक संघर्षों के माध्यम से भी व्यक्त करती हैं।

यशपाल की कहानियाँ विभाजन के सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यशपाल ने विभाजन को सांप्रदायिक राजनीति और सामाजिक विघटन के परिणाम के रूप में देखा। उनकी रचनाओं में सांप्रदायिकता की आलोचना तथा सामाजिक चेतना का स्पष्ट स्वर दिखाई देता है। वे यह दिखाते हैं कि धार्मिक कट्टरता और राजनीतिक स्वार्थ किस प्रकार समाज को विभाजित कर देते हैं और सामान्य जनता को हिंसा तथा असुरक्षा की स्थिति में पहुँचा देते हैं। उनकी कहानियों में सांप्रदायिक संघर्ष केवल दो समुदायों के बीच का विवाद नहीं है, बल्कि मानवीय मूल्यों के पतन का संकेतक है (यशपाल, 2011)। यशपाल के पात्र सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़े हुए हैं और उनके माध्यम से लेखक विभाजन की प्रक्रिया में निहित राजनीतिक विडंबनाओं को उजागर करते हैं।

यशपाल की रचनाओं में यह विचार भी प्रमुखता से उभरता है कि विभाजन की वास्तविक कीमत आम लोगों ने चुकाई, जबकि राजनीतिक नेतृत्व अपने उद्देश्यों की पूर्ति में व्यस्त रहा। इस दृष्टि से उनकी कहानियाँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक आलोचना का भी महत्वपूर्ण माध्यम हैं। वे सांप्रदायिकता के विरुद्ध तर्कशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए मानवतावादी मूल्यों की स्थापना का प्रयास करती हैं (पाण्डेय, 2001)।

कृष्णा सोबती की कहानियाँ विभाजन साहित्य को एक विशिष्ट स्त्री-दृष्टि प्रदान करती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी *सिक्का बदल गया* विभाजन के बाद बदलती सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण करती है। कहानी में विभाजन के कारण उत्पन्न असुरक्षा, विस्थापन और संबंधों के विघटन को विशेष रूप से स्त्री-अनुभव के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। कृष्णा सोबती यह दिखाती हैं कि विभाजन केवल राजनीतिक सीमाओं का परिवर्तन नहीं था, बल्कि सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों और व्यक्तिगत पहचान के पुनर्गठन की प्रक्रिया भी था (सोबती, 2017)।

कृष्णा सोबती की रचनाओं में सांस्कृतिक स्मृति का विशेष महत्व है। उनके पात्र अपने अतीत, अपने परिवेश और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से गहरे रूप में जुड़े हुए दिखाई देते हैं। विभाजन के बाद जब यह संसार बिखर जाता है, तब स्मृति ही उनके लिए पहचान का आधार बनती है। स्त्री पात्रों के माध्यम से वे यह भी दर्शाती हैं कि विभाजन की हिंसा ने महिलाओं को किस प्रकार विशेष रूप से प्रभावित किया। इस प्रकार उनकी कहानियाँ स्त्री-अनुभव, सांस्कृतिक स्मृति और पहचान-संकट के त्रिकोणीय संबंध को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करती हैं (पाण्डेय, 1998)।

कमलेश्वर तथा अन्य कथाकारों ने भी विभाजन की बहुआयामी व्याख्या प्रस्तुत की है। कमलेश्वर का साहित्य विशेष रूप से साझा संस्कृति, मानवीय मूल्यों और इतिहास की पुनर्व्याख्या पर बल देता है। यद्यपि *कितने पाकिस्तान* एक उपन्यास है, फिर भी उसमें व्यक्त विचार विभाजन साहित्य की व्यापक समझ प्रदान करते हैं। कमलेश्वर विभाजन को केवल भारत और पाकिस्तान के संदर्भ में नहीं देखते, बल्कि उसे मनुष्य द्वारा निर्मित विभाजनों की व्यापक समस्या से जोड़ते हैं (Kamleshwar, 2000)। उनकी दृष्टि में सांप्रदायिकता और विभाजन मानव सभ्यता के लिए स्थायी चुनौती हैं, जिनका समाधान केवल मानवता और सह-अस्तित्व के मूल्यों में निहित है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो इन सभी कथाकारों की रचनाओं में कुछ महत्वपूर्ण समानताएँ दिखाई देती हैं। सबसे पहले, सभी लेखक विभाजन को एक गहरी मानवीय त्रासदी के रूप में प्रस्तुत करते हैं और सांप्रदायिक हिंसा के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। दूसरे, उनकी कहानियों में विस्थापन, स्मृति, पहचान-संकट और मानवता की खोज जैसे विषय समान रूप से उपस्थित हैं। तीसरे, वे राजनीतिक घटनाओं की अपेक्षा सामान्य मनुष्य के अनुभवों को अधिक महत्व देते हैं और विभाजन के मानवीय परिणामों को केंद्र में रखते हैं (सिंह, 2010)।

हालाँकि, इन लेखकों की दृष्टियों में कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी हैं। भीष्म साहनी का ध्यान मानवीय संवेदना और नैतिक संघर्षों पर केंद्रित है, जबकि यशपाल सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ और सांप्रदायिकता की आलोचना को अधिक महत्व देते हैं। कृष्णा सोबती विभाजन को स्त्री-अनुभव और सांस्कृतिक स्मृति के संदर्भ में देखती हैं, जबकि कमलेश्वर इसे व्यापक मानवीय और सभ्यतागत संकट के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मोहन राकेश और विष्णु प्रभाकर की कहानियों में विस्थापन और स्मृति का भावनात्मक पक्ष अपेक्षाकृत अधिक उभरकर सामने आता है। इस प्रकार प्रत्येक कथाकार विभाजन की त्रासदी को अपनी विशिष्ट दृष्टि से देखता है, किंतु अंततः सभी की रचनाएँ मानवता, सह-अस्तित्व और सांस्कृतिक संवेदना की आवश्यकता को

रेखांकित करती हैं। अतः स्पष्ट है कि हिंदी विभाजन-कथा साहित्य में विभिन्न कथाकारों ने विभाजन के अनेक आयामों को अभिव्यक्त करते हुए एक समृद्ध और बहुआयामी साहित्यिक परंपरा का निर्माण किया है। उनकी रचनाएँ न केवल इतिहास की स्मृतियों को संरक्षित करती हैं, बल्कि वर्तमान समाज को भी यह चेतावनी देती हैं कि सांप्रदायिकता, घृणा और असहिष्णुता अंततः मानवता के लिए विनाशकारी सिद्ध होती हैं। यही कारण है कि विभाजन-कथाएँ आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं और मानवता के पक्ष में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक हस्तक्षेप के रूप में पढ़ी जाती हैं।

4. निष्कर्ष

भारत-विभाजन भारतीय इतिहास की उन घटनाओं में से एक है जिसने न केवल राजनीतिक भूगोल को परिवर्तित किया, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन, उनकी स्मृतियों, संबंधों और सांस्कृतिक पहचान को भी गहराई से प्रभावित किया। हिंदी विभाजन-कथाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विभाजन को केवल एक राजनीतिक घटना के रूप में नहीं समझा जा सकता, बल्कि यह एक व्यापक मानवीय त्रासदी थी, जिसने व्यक्ति और समाज दोनों को गहरे स्तर पर आहत किया। विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न विस्थापन, सांप्रदायिक हिंसा, शरणार्थी जीवन की कठिनाइयाँ, स्त्रियों पर हुए अत्याचार, पारिवारिक विघटन तथा मानसिक आघात जैसी परिस्थितियाँ हिंदी कहानियों में अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थपरकता के साथ अभिव्यक्त हुई हैं। इन कहानियों में विभाजन की पीड़ा केवल ऐतिहासिक तथ्य नहीं, बल्कि जीवंत मानवीय अनुभव के रूप में उपस्थित होती है, जो पाठकों को उस समय की त्रासदी का प्रत्यक्ष अनुभव कराती है (पाण्डेय, 2001)।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि विभाजन ने सांस्कृतिक पहचान के गंभीर संकट को जन्म दिया। लाखों लोगों को अपनी जन्मभूमि, भाषा, लोक-संस्कृति और सामाजिक परिवेश से अलग होना पड़ा, जिसके कारण उनकी सांस्कृतिक अस्मिता प्रभावित हुई। हिंदी विभाजन-कथाएँ यह दर्शाती हैं कि सांस्कृतिक पहचान केवल धार्मिक संबद्धता तक सीमित नहीं होती, बल्कि स्मृतियों, परंपराओं, सामाजिक संबंधों और साझा सांस्कृतिक अनुभवों से निर्मित होती है। विभाजन के बाद उत्पन्न पहचान-संकट, अतीत की स्मृतियों के प्रति लगाव तथा नए परिवेश में स्वयं को पुनर्स्थापित करने का संघर्ष इन कहानियों के प्रमुख विषय रहे हैं (बुटालिया, 1998)। इस प्रकार हिंदी विभाजन साहित्य सांस्कृतिक स्मृति और पहचान के प्रश्नों को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बनकर सामने आता है।

हिंदी विभाजन-कथाओं का साहित्यिक महत्व इस तथ्य में निहित है कि वे इतिहास और साहित्य के बीच एक सशक्त संवाद स्थापित करती हैं। जहाँ इतिहास विभाजन की घटनाओं, तिथियों और राजनीतिक प्रक्रियाओं का विवरण प्रस्तुत करता है, वहीं साहित्य उन घटनाओं के मानवीय प्रभावों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। भीष्म साहनी, यशपाल, कृष्णा सोबती, कमलेश्वर, मोहन राकेश तथा अन्य कथाकारों की रचनाएँ विभाजन की आधिकारिक ऐतिहासिक व्याख्याओं से आगे बढ़कर सामान्य मनुष्य के अनुभवों को केंद्र में रखती हैं। इन कहानियों के माध्यम से विभाजन की वे संवेदनाएँ और अनुभव संरक्षित हुए हैं जो प्रायः औपचारिक इतिहास-लेखन में उपेक्षित रह जाते हैं। इसलिए हिंदी विभाजन-कथाएँ केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि सामूहिक स्मृति के महत्वपूर्ण दस्तावेज़ भी हैं।

विभाजन साहित्य स्मृति और संवेदना के संरक्षण का भी महत्वपूर्ण कार्य करता है। इन कहानियों में अतीत की घटनाएँ केवल पुनर्स्मरण के लिए नहीं आतीं, बल्कि वे वर्तमान और भविष्य के लिए नैतिक चेतावनी का कार्य करती हैं। विभाजन की स्मृतियाँ पाठकों को यह समझने में सहायता करती हैं कि सांप्रदायिक घृणा, असहिष्णुता और राजनीतिक स्वार्थ किस प्रकार समाज को विनाश की ओर ले जा सकते हैं। साथ ही, ये रचनाएँ मानवता, करुणा और सह-अस्तित्व जैसे मूल्यों के महत्व को भी रेखांकित करती हैं।

समकालीन संदर्भ में हिंदी विभाजन-कथाओं की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। वर्तमान समय में जब विश्व के अनेक समाज जातीय, धार्मिक और सांस्कृतिक संघर्षों का सामना कर रहे हैं, तब विभाजन साहित्य हमें इतिहास से सीख लेने की प्रेरणा देता है। ये कहानियाँ सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक सहिष्णुता और मानवीय एकता के महत्व को रेखांकित करती हैं। विभाजन-कथाकारों ने यह स्पष्ट किया है कि धर्म, भाषा या समुदाय के आधार पर

निर्मित विभाजन अंततः मानवता के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं, जबकि साझा संस्कृति और पारस्परिक सम्मान सामाजिक समरसता की आधारशिला हैं। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी विभाजन-कथाएँ भारत-विभाजन की मानवीय त्रासदी और सांस्कृतिक पहचान के संकट का अत्यंत प्रभावशाली साहित्यिक दस्तावेज़ प्रस्तुत करती हैं। ये रचनाएँ इतिहास, स्मृति, पहचान और मानवता के जटिल अंतर्संबंधों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। साथ ही, वे वर्तमान समाज को यह संदेश देती हैं कि साझा सांस्कृतिक विरासत, मानवीय संवेदना और सह-अस्तित्व के मूल्य ही एक शांतिपूर्ण और समावेशी समाज के निर्माण का आधार बन सकते हैं।

संदर्भ सूची

अहमद, एजाज़. (1997). *ट्रिस्ट विद डेस्टिनी: फ्री बट डिवाइडेड.* इंडिया विशेषांक, 15 अगस्त, 21–28.

भल्ला, आलोक. (1994). *स्टोरीज़ अबाउट द पार्टिशन ऑफ इंडिया* (3 खंड). नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स.

भल्ला, आलोक. (1997). *द लाइफ एंड वर्क्स ऑफ सआदत हसन मंटो.* शिमला: इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़.

बुटालिया, उर्वशी. (1998). *द अदर साइड ऑफ साइलेंस: वॉइसेज़ फ्रॉम द पार्टिशन ऑफ इंडिया.* नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स.

चंद्र, बिपिन, मुखर्जी, मृदुला, मुखर्जी, आदित्य, पनिक्कर, के. एन., एवं महाजन, सुचेता. (2016). *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.

कौवासजी, एस., एवं दुग्गल, के. एस. (सम्पा.). (1995). *ऑर्फ़न्स ऑफ द स्टॉर्म: स्टोरीज़ ऑन द पार्टिशन ऑफ इंडिया.* नई दिल्ली: यूबीएस पब्लिशर्स.

कमलेश्वर. (2000). *कितने पाकिस्तान.* नई दिल्ली: राजपाल एंड संस.

मेमन, एम. यू. (सम्पा.). (1998). *एन एपिक अनरिटन: द पेंगुइन बुक ऑफ पार्टिशन स्टोरीज़.* नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स.

मेनन, ऋतु, एवं भसीन, कमला. (1998). *बॉर्डर्स एंड बाउंड्रीज़: वीमेन इन इंडियाज़ पार्टिशन.* नई दिल्ली: काली फॉर वीमेन.

मोहन राकेश. (2011). *मलबे का मालिक तथा अन्य कहानियाँ.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

पाण्डेय, ज्ञानेन्द्र. (2001). *रिमेम्बरिंग पार्टिशन: वायलेंस, नेशनलिज़्म एंड हिस्ट्री इन इंडिया.* कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

रविकांत, एवं सेंट, तरुण के. (सम्पा.). (2001). *ट्रांसलेटिंग पार्टिशन.* नई दिल्ली: कथा प्रकाशन.

साहनी, भीष्म. (2018). *भीष्म साहनी की प्रतिनिधि कहानियाँ.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

सिंह, गुरहरपाल, एवं टैलबॉट, इयान. (2009). *द पार्टिशन ऑफ इंडिया.* कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

सोबती, कृष्णा. (2017). *सिक्का बदल गया तथा अन्य कहानियाँ.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

टैलबॉट, इयान. (2006). "पार्टिशन, मेमोरी एंड ट्रॉमा: वॉइसेज़ ऑफ पंजाबी रिफ्यूजी माइग्रेंट्स इन लाहौर एंड अमृतसर।" *सिख फॉर्मेशन्स, 2*(1), 3–16.

Cite this Article:

सेहरा, धर्मेन्द्र कुमार .(2026). भारत-विभाजन की हिंदी कहानियों में मानवीय त्रासदी और सांस्कृतिक पहचान. The Research Dialogue, 5(2), 377–385., Volume-05, Issue-02, July-2026. DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.39

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

धर्मेन्द्र कुमार सेहरा

भारत-विभाजन की हिंदी कहानियों में मानवीय त्रासदी और सांस्कृतिक पहचान

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.39